



## राष्ट्रीय एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय समझ के लिए शिक्षा

\*<sup>1</sup>सत्य नरायन यादव और <sup>2</sup>सुरमल नार्वे

\*<sup>1, 2</sup>सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरवां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

### सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र "राष्ट्रीय एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय समझ के लिए शिक्षा" के विविध आयामों और वर्तमान समय में इसकी अपरिहार्यता का विश्लेषण करता है। वर्तमान २१वीं सदी के चुनौतीपूर्ण वैश्विक वातावरण में, जहाँ एक ओर संकीर्ण राष्ट्रवाद और सांप्रदायिकता जैसी चुनौतियाँ सिर उठा रही हैं, वहीं दूसरी ओर वैश्वीकरण ने पूरे विश्व को एक 'ग्लोबल विलेज' में बदल दिया है। ऐसे में शिक्षा ही वह एकमात्र सशक्त माध्यम है जो व्यक्ति के दृष्टिकोण को व्यापक बना सकती है। शोध के प्रथम चरण में राष्ट्रीय एकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। भारत जैसे बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी देश के लिए राष्ट्रीय एकता का अर्थ भौगोलिक सीमाओं से परे 'भावनात्मक एकता' है। यहाँ शिक्षा की भूमिका छात्रों के मन से भाषावाद, क्षेत्रवाद और जातिवाद के जहर को निकालकर उनमें "राष्ट्र प्रथम" की भावना विकसित करने की है। शिक्षक, पाठ्यक्रम और विद्यालयी गतिविधियों के माध्यम से विविधता में एकता के दर्शन को जीवंत बनाया जाता है। शोध के द्वितीय चरण में अंतर्राष्ट्रीय समझ की व्याख्या की गई है। परमाणु हथियारों और जलवायु परिवर्तन के इस युग में, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग अब केवल एक विकल्प नहीं बल्कि अस्तित्व की आवश्यकता है। भारतीय दर्शन का मूल मंत्र 'वसुधैव कुटुंबकम्' अंतर्राष्ट्रीयता का सर्वोत्तम आधार प्रदान करता है। शिक्षा के माध्यम से जब छात्र अन्य देशों की संस्कृतियों और समस्याओं को समझते हैं, तो उनमें सहिष्णुता और वैश्विक नागरिकता (Global Citizenship) का विकास होता है। राष्ट्रीय एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय समझ एक-दूसरे के पूरक हैं। एक व्यक्ति जो अपने देश की विविधता का सम्मान करना सीखता है, वही वैश्विक विविधता को स्वीकार करने के योग्य बनता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के संदर्भ में, शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो अपने देश के प्रति वफादार हों और साथ ही संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हों। अंततः, यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए शिक्षा को "स्थानीय से वैश्विक" (Local to Global) के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए।

**मुख्य शब्द:** राष्ट्रीय एकीकरण, अंतर्राष्ट्रीय समझ, शिक्षक की भूमिका, भारतीय त्योहारों की भूमिका, वसुधैव कुटुंबकम् एवं शिक्षा।

### 1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के इतिहास में शिक्षा को हमेशा से प्रकाश का वह पुंज माना गया है जो अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर समाज को नई दिशा प्रदान करता है। वर्तमान २१वीं सदी में शिक्षा की भूमिका केवल साक्षरता या जीविकोपार्जन तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो आंतरिक रूप से एकीकृत हो और वैश्विक स्तर पर सहयोगात्मक दृष्टिकोण रखता हो। इसी संदर्भ में 'राष्ट्रीय एकीकरण' और 'अंतर्राष्ट्रीय समझ' दो ऐसे आधारभूत तत्व हैं, जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति और विश्व शांति के लिए अनिवार्य हैं।

राष्ट्रीय एकीकरण का तात्पर्य एक ऐसी मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक प्रक्रिया से है, जो किसी देश के नागरिकों के बीच धर्म, भाषा, जाति और क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद 'एकता' और 'अपनेपन' की भावना विकसित करती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में, जहाँ "कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी" की कहावत चरितार्थ होती है, वहाँ राष्ट्रीय एकीकरण राष्ट्र

की संप्रभुता को बनाए रखने की पहली शर्त है। जब नागरिक व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हैं, तब एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण होता है।

अंतर्राष्ट्रीय समझ का अर्थ व्यक्ति की उस चेतना से है जो उसे वैश्विक नागरिक (Global Citizen) के रूप में पहचान दिलाती है। आज का युग वैश्वीकरण का युग है, जहाँ दुनिया के एक कोने में होने वाली घटना का प्रभाव दूसरे कोने पर निश्चित रूप से पड़ता है। परमाणु शक्ति, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक महामारियों के इस दौर में कोई भी राष्ट्र अलग-थलग रहकर जीवित नहीं रह सकता। यहाँ 'वसुधैव कुटुंबकम्' का भारतीय दर्शन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, जो हमें सिखाता है कि संपूर्ण विश्व एक ही परिवार है। प्रस्तुत शोध पत्र इस विचार पर केंद्रित है कि शिक्षा किस प्रकार इन दोनों लक्ष्यों को प्राप्त करने में सेतु का कार्य करती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो एक छात्र के मन में अपने देश के प्रति गौरव का भाव भी भरती है और साथ ही उसे अन्य संस्कृतियों के प्रति सहिष्णु और सम्मानजनक भी बनाती है। इस शोध के माध्यम से हम यह समझने

का प्रयास करेंगे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के आलोक में राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता के बीच संतुलन स्थापित करना क्यों आवश्यक है और इसमें शिक्षक एवं शिक्षण संस्थानों की क्या भूमिका हो सकती है।

## 2. राष्ट्रीय एकीकरण: अर्थ एवं परिभाषा

राष्ट्रीय एकीकरण (National Integration) एक मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी राष्ट्र के नागरिकों के हृदय में एकता, सामंजस्य और परस्पर विश्वास की भावना विकसित की जाती है। इसका अर्थ केवल भौगोलिक सीमाओं का एक होना नहीं है, बल्कि विविध पृष्ठभूमि (जाति, धर्म, भाषा और संस्कृति) के लोगों का एक 'राष्ट्र' के रूप में स्वयं को अनुभव करना है।

### i). राष्ट्रीय एकीकरण का अर्थ

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में राष्ट्रीय एकीकरण का अर्थ "विविधता में एकता" (Unity in Diversity) से है। यह एक ऐसी भावना है जो नागरिकों को उनके व्यक्तिगत, क्षेत्रीय या धार्मिक हितों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती है। जब समाज के सभी वर्ग आपसी मतभेदों को भुलाकर राष्ट्र की प्रगति और सुरक्षा के लिए एकजुट होते हैं, तो उसे ही वास्तविक राष्ट्रीय एकीकरण कहा जाता है।

### ii). प्रमुख परिभाषाएँ

विभिन्न विद्वानों और समितियों ने इसे निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है:

- **डॉ. एस. राधाकृष्णन के अनुसार:** "राष्ट्रीय एकीकरण कोई ईट-गारे का बना हुआ मकान नहीं है जिसे औद्योगिक योजनाओं द्वारा निर्मित किया जा सके। यह एक ऐसी भावना है जो लोगों के हृदय में धीरे-धीरे विकसित होती है।"
- **पंडित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार:** "राष्ट्रीय एकीकरण का अर्थ है—हृदयों की एकता, केवल एक साथ रहने की मजबूरी नहीं।"
- **राष्ट्रीय एकीकरण सम्मेलन (1961) के अनुसार:** "यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से लोगों के दिलों में समान नागरिकता की भावना और राष्ट्र के प्रति वफादारी विकसित की जाती है।"

## 3. राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षक की भूमिका

राष्ट्रीय एकीकरण एक मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य नागरिकों में एकता, सामंजस्य और राष्ट्र के प्रति अटूट निष्ठा विकसित करना है। भारत जैसे विविधताओं वाले देश में, जहाँ कदम-कदम पर भाषा, धर्म और संस्कृति बदलती है, वहाँ राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। इस चुनौती को स्वीकार करने और नई पीढ़ी के मन में "राष्ट्र प्रथम" का भाव जगाने की सर्वाधिक जिम्मेदारी शिक्षक पर होती है।

शिक्षक की भूमिका को हम निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

- संकीर्णता का उन्मूलन और निष्पक्ष दृष्टिकोण:** एक शिक्षक का सबसे बड़ा योगदान छात्रों के मन से संकीर्ण भावनाओं (जैसे जातिवाद, क्षेत्रवाद और सांप्रदायिकता) को समाप्त करना है। शिक्षक कक्षा में एक ऐसा वातावरण बनाता है जहाँ हर छात्र, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि का हो, स्वयं को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करता है। शिक्षक का अपना निष्पक्ष आचरण छात्रों के लिए एक जीवित उदाहरण बनता है।
- सांस्कृतिक समन्वय और सहिष्णुता:** शिक्षक छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों की लोककलाओं, त्योहारों और परंपराओं से

परिचित कराता है। जब छात्र अन्य संस्कृतियों की अच्छाइयों को समझते हैं, तो उनके मन में सम्मान और सहिष्णुता का भाव पैदा होता है। शिक्षक 'विविधता में एकता' के भारतीय दर्शन को छात्रों के जीवन का हिस्सा बनाता है।

- राष्ट्रीय प्रतीकों और मूल्यों के प्रति सम्मान:** शिक्षक का कर्तव्य है कि वह छात्रों को राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत और संविधान के मूल कर्तव्यों के प्रति जागरूक करे। वह महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन संघर्षों की कहानियाँ सुनाकर छात्रों में देशभक्ति की लौ प्रज्वलित करता है, जिससे छात्र यह समझ पाते हैं कि यह स्वतंत्रता और एकता कितनी बहुमूल्य है।
- पाठ्य-सहगामी गतिविधियों का आयोजन:** शिक्षक केवल कक्षा शिक्षण तक सीमित नहीं रहता। वह विद्यालय में राष्ट्रीय पर्वों, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, सामूहिक गीतों और खेल-कूद का आयोजन करता है। इन गतिविधियों में छात्र एक साथ मिलकर काम करते हैं, जिससे उनमें 'हम' की भावना (We-feeling) का विकास होता है। एनसीसी (NCC) और स्काउट-गाइड जैसी गतिविधियाँ अनुशासन और सामूहिक उत्तरदायित्व की सीख देती हैं।
- आधुनिक और वैश्विक दृष्टिकोण का समन्वय:** आज के डिजिटल युग में, शिक्षक छात्रों को यह सिखाता है कि कैसे अपनी जड़ों (भारतीय संस्कृति) से जुड़े रहकर आधुनिक तकनीक और वैश्विक ज्ञान का उपयोग राष्ट्रहित में किया जाए। वह छात्रों को एक जागरूक नागरिक के रूप में तैयार करता है जो देश की समस्याओं (जैसे गरीबी, अशिक्षा और प्रदूषण) के समाधान में सक्रिय भूमिका निभा सके।

शिक्षक राष्ट्र की एकता का वास्तविक वास्तुकार है। वह अपनी वाणी, व्यवहार और शिक्षण पद्धति से छात्रों के हृदय में वह बीज बोता है, जो आगे चलकर एक वटवृक्ष के रूप में अखंड राष्ट्र की छाया प्रदान करता है। यदि शिक्षक अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन पूरी निष्ठा से करे, तो राष्ट्रीय एकीकरण की राह में आने वाली हर बाधा को दूर किया जा सकता है। राष्ट्रीय एकीकरण वह धागा है जो समाज के विभिन्न मोतियों को एक माला में पिरोता है। शिक्षा इस प्रक्रिया का सबसे सशक्त आधार है, क्योंकि यह संकीर्णता को मिटाकर व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करती है। एक एकीकृत राष्ट्र ही आंतरिक शांति और बाह्य सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकता है।

## 4. राष्ट्रीय एकीकरण में भारतीय त्योहारों की भूमिका

भारत एक ऐसा देश है जहाँ त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक एकता के सूत्र हैं। 'राष्ट्रीय एकीकरण' का अर्थ है देश के सभी नागरिकों के बीच एकता और भाईचारे की भावना का होना, और भारतीय त्योहार इस भावना को मजबूत करने में आधारशिला का कार्य करते हैं।

राष्ट्रीय एकीकरण में त्योहारों की भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

- सांस्कृतिक समन्वय और मेल-जोल:** भारत में मनाए जाने वाले त्योहार जैसे दीपावली, ईद, होली, क्रिसमस और पोंगल किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं रहते। होली के रंगों में हर धर्म के लोग सराबोर होते हैं, तो ईद की सेंवइयाँ और दिवाली की मिठाइयाँ पड़ोसियों के बीच की दूरियों को मिटा देती हैं। यह मेल-जोल समाज में 'सांस्कृतिक सामंजस्य' पैदा करता है, जो राष्ट्रीय एकता के लिए अनिवार्य है।
- विविधता में एकता का दर्शन:** भारत के विभिन्न राज्यों में त्योहारों के नाम अलग हो सकते हैं, लेकिन उनका उद्देश्य एक ही होता है। उदाहरण के लिए, फसल कटाई के समय पंजाब में 'बैसाखी', असम में 'बिहू', तमिलनाडु में 'पोंगल' और केरल में

'ओणम' मनाया जाता है। ये त्योहार हमें यह अहसास कराते हैं कि भौगोलिक रूप से अलग होने के बावजूद, हमारी खुशियाँ और उल्लास के कारण एक ही हैं।

- iii). **राष्ट्रीय पर्व और देशभक्ति:** स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और गांधी जयंती जैसे राष्ट्रीय त्योहार पूरे देश में एक साथ मनाए जाते हैं। ये पर्व किसी धर्म या जाति के नहीं, बल्कि पूरे 'भारतीय' होने के गौरव के हैं। जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक साथ तिरंगा फहराया जाता है, तो नागरिकों के भीतर राष्ट्र के प्रति समर्पण और एकता की भावना चरम पर होती है।
- iv). **सामाजिक कुरीतियों का अंत:** त्योहारों के दौरान होने वाले सामूहिक आयोजन समाज में व्याप्त ऊँच-नीच और छुआछूत जैसी कुरीतियों को कमजोर करते हैं। सामुदायिक भोज (लंगर), सामूहिक पूजा और सार्वजनिक उत्सवों में सभी वर्गों के लोग एक साथ शामिल होते हैं, जिससे सामाजिक सद्भाव बढ़ता है।

भारतीय त्योहार उस गोंद की तरह हैं जो विभिन्न संप्रदायों और समुदायों को एक राष्ट्र के रूप में जोड़े रखते हैं। ये त्योहार हमें सिखाते हैं कि हमारी पहचान केवल हमारी भाषा या धर्म से नहीं, बल्कि हमारी साझा विरासत और सामूहिक उल्लास से है। यही साझा पहचान राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूती प्रदान करती है।

## 5. अंतर्राष्ट्रीयता (Internationalism): अर्थ, परिभाषा एवं महत्त्व

वर्तमान युग वैश्वीकरण और सूचना क्रांति का युग है, जहाँ कोई भी देश अलग-थलग रहकर प्रगति नहीं कर सकता। 'अंतर्राष्ट्रीयता' वह विचार है जो व्यक्ति को केवल अपने देश की सीमाओं तक सीमित न रहकर संपूर्ण विश्व के कल्याण के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है।

### i). अंतर्राष्ट्रीयता का अर्थ

अंतर्राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जो व्यक्ति को यह बोध कराती है कि वह केवल एक राष्ट्र का नागरिक नहीं है, बल्कि 'विश्व का नागरिक' (World Citizen) भी है। यह राष्ट्रों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, आपसी सहयोग और भाईचारे पर आधारित है। इसका मूल मंत्र भारतीय दर्शन के 'वसुधैव कुटुंबकम्' (संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है) में समाहित है।

### ii). प्रमुख परिभाषाएँ

विभिन्न विद्वानों ने अंतर्राष्ट्रीयता को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है:

- **गोल्डस्मिथ के अनुसार:** "अंतर्राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं को केवल अपने राष्ट्र का ही सदस्य नहीं मानता, बल्कि विश्व के समस्त मानव समाज का एक अंग मानता है।"
- **प्रो. एच. जे. लास्की के अनुसार:** "अंतर्राष्ट्रीयता का अर्थ यह स्वीकार करना है कि हमारा पहला कर्तव्य मानवता के प्रति है और उसके बाद अपने देश के प्रति।"
- **डॉ. वाल्टर कोवेल्स के अनुसार:** "अंतर्राष्ट्रीयता एक विश्वास है कि सभी मानव जाति समान हैं और राष्ट्रों के बीच सहयोग के माध्यम से ही विश्व की समस्याओं का समाधान संभव है।"

### iii). अंतर्राष्ट्रीयता का महत्त्व

आज के समय में अंतर्राष्ट्रीयता केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि एक आवश्यकता बन गई है। इसके महत्त्व को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

- **विश्व शांति की स्थापना:** परमाणु युग में युद्ध का अर्थ संपूर्ण

विनाश है। अंतर्राष्ट्रीयता की भावना देशों के बीच तनाव कम कर शांति और अहिंसा को बढ़ावा देती है।

- **वैश्विक समस्याओं का समाधान:** जलवायु परिवर्तन (Global Warming), महामारी (जैसे COVID-19), गरीबी और आतंकवाद जैसी समस्याएँ कोई एक देश अकेले हल नहीं कर सकता। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग अनिवार्य है।
- **आर्थिक निर्भरता:** आज व्यापार और तकनीक के मामले में सभी देश एक-दूसरे पर निर्भर हैं। अंतर्राष्ट्रीय समझ से व्यापारिक संबंध मजबूत होते हैं, जिससे आर्थिक समृद्धि आती है।
- **सांस्कृतिक विनिमय:** यह विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं के प्रति सम्मान विकसित करती है। इससे संकीर्णता दूर होती है और एक उदार वैश्विक समाज का निर्माण होता है।
- **मानवाधिकारों की सुरक्षा:** अंतर्राष्ट्रीयता व्यक्ति के मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए वैश्विक मानकों (जैसे UN Charter) का समर्थन करती है।

अंतर्राष्ट्रीयता 'राष्ट्रवाद' की विरोधी नहीं, बल्कि उसका विस्तार है। एक सच्चा राष्ट्रवादी वही है जो अपने देश से प्रेम करे और साथ ही शेष विश्व के प्रति सम्मान और सहयोग की भावना रखे। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी छात्रों में यही वैश्विक दृष्टिकोण पैदा करना होना चाहिए ताकि वे एक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य का निर्माण कर सकें।

## 6. अंतर्राष्ट्रीय समझ को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका

'अंतर्राष्ट्रीय समझ' का अर्थ है विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के बीच शांति, सहयोग और सह-अस्तित्व की भावना। वर्तमान युग में, जहाँ पूरा विश्व एक 'ग्लोबल विलेज' (Global Village) बन चुका है, शिक्षा ही वह माध्यम है जो व्यक्ति को अपनी राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर उठाकर एक वैश्विक नागरिक (Global Citizen) बनाती है। अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने में शिक्षा की भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

- i). **वैश्विक दृष्टिकोण का विकास:** शिक्षा का प्रमुख कार्य छात्र की सोच को व्यापक बनाना है। भूगोल, इतिहास और नागरिक शास्त्र जैसे विषयों के माध्यम से छात्र यह समझते हैं कि दुनिया के सभी लोग अपनी बुनियादी जरूरतों और भावनाओं में समान हैं। शिक्षा यह सिखाती है कि किसी एक देश की समस्या (जैसे-पर्यावरण प्रदूषण या महामारी) पूरे विश्व की समस्या है।
- ii). **सांस्कृतिक सहिष्णुता और सम्मान:** शिक्षा के माध्यम से छात्र विभिन्न देशों की संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं के बारे में जानते हैं। जब हम दूसरों की संस्कृति को समझते हैं, तो उनके प्रति भय या घृणा समाप्त हो जाती है और सम्मान का भाव पैदा होता है। शैक्षिक विनिमय कार्यक्रम (Exchange Programs) इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- iii). **'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना:** भारतीय शिक्षा दर्शन हमेशा से "संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है" के विचार पर आधारित रहा है। आधुनिक शिक्षा इस प्राचीन मूल्य को वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है। यह छात्रों को सिखाती है कि शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व ही मानव जाति के अस्तित्व का एकमात्र रास्ता है।
- iv). **यूनेस्को (UNESCO) और शांति शिक्षा:** शिक्षा छात्रों को संयुक्त राष्ट्र (UN) और यूनेस्को जैसी संस्थाओं के उद्देश्यों से परिचित कराती है। यूनेस्को का मानना है कि "चूंकि युद्ध मनुष्यों के मस्तिष्क में शुरू होते हैं, इसलिए शांति की रक्षा के लिए सुरक्षा घेरे भी मनुष्यों के मस्तिष्क में ही बनाए जाने चाहिए।" शिक्षा इसी 'मानसिक सुरक्षा घेरे' का निर्माण करती है।

v). **पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों का अंत:** अज्ञानता ही नफरत की जड़ है। शिक्षा तर्क और तथ्यों के आधार पर अन्य राष्ट्रों के प्रति बने पूर्वाग्रहों को दूर करती है। यह छात्रों में आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) विकसित करती है, जिससे वे दुष्प्रचार (Propaganda) का शिकार नहीं होते।

शिक्षा वह सेतु है जो राष्ट्रों के बीच की दूरियों को पाटती है। यह छात्रों के "सिर, हृदय और हाथ" को इस प्रकार प्रशिक्षित करती है कि वे न केवल अपने देश के प्रति वफादार रहें, बल्कि संपूर्ण मानवता के प्रति सहानुभूति और जिम्मेदारी का भाव भी रखें। जैसा कि अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था, "शिक्षा वह है जो सब कुछ भूल जाने के बाद भी याद रहती है," और अंतर्राष्ट्रीय समझ वही स्थायी मूल्य है।

**7. राष्ट्रीय एकीकरण अंतर्राष्ट्रीय समझ में भारत की भूमिका**  
भारत की सांस्कृतिक विरासत और दार्शनिक पृष्ठभूमि ने उसे सदैव 'एकता' और 'विश्व बंधुत्व' का अग्रदूत बनाया है। राष्ट्रीय एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय समझ को बढ़ावा देने में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अनुकरणीय रही है।

i). **राष्ट्रीय एकीकरण में भारत की भूमिका**  
भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और विविधताओं वाला देश है। यहाँ की भूमिका निम्नलिखित आधारों पर टिकी है:

- **विविधता में एकता (Unity in Diversity):** भारत ने दुनिया को दिखाया है कि कैसे सैकड़ों भाषाएँ, विभिन्न धर्म और अनेक संस्कृतियाँ एक ही संवैधानिक ढाँचे के भीतर फल-फूल सकती हैं।
- **संवैधानिक ढाँचा:** भारत का संविधान सभी नागरिकों को समान अधिकार देकर क्षेत्रीय और भाषाई भेदभाव को समाप्त करता है, जो राष्ट्रीय एकता का आधार है।
- **सांस्कृतिक समन्वय:** भारत की 'गंगा-जमुनी तहजीब' और सहिष्णुता की भावना ने विभिन्न समुदायों को एक सूत्र में पिरोया है।

ii). **अंतर्राष्ट्रीय समझ में भारत की भूमिका**  
वैश्विक मंच पर भारत का दृष्टिकोण सदैव कल्याणकारी और शांतिपूर्ण रहा है:

- **वसुधैव कुटुंबकम्:** "संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है"—यह प्राचीन भारतीय विचार आज अंतर्राष्ट्रीय समझ का मूल मंत्र बन चुका है। भारत ने G20 की अध्यक्षता के दौरान भी 'One Earth, One Family, One Future' का संदेश देकर इसी भूमिका को दोहराया है।
- **पंचशील के सिद्धांत:** भारत ने विश्व को शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांत दिए, जो राष्ट्रों के बीच आपसी सम्मान और अहस्तक्षेप की वकालत करते हैं।
- **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM):** शीत युद्ध के दौरान भारत ने किसी भी शक्ति गुट में शामिल न होकर स्वतंत्र और निष्पक्ष विदेश नीति का मार्ग दिखाया, जिससे वैश्विक तनाव कम करने में मदद मिली।
- **मानवीय सहायता:** 'वैक्सीन मैत्री' हो या आपदाओं के समय अन्य देशों की मदद (जैसे 'ऑपरेशन दोस्त'), भारत ने हमेशा साबित किया है कि वह मानवता को सीमाओं से ऊपर रखता है।

भारत की भूमिका केवल उपदेश देने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसने अपने आचरण से सिद्ध किया है कि आंतरिक एकता (राष्ट्रीय एकीकरण) और बाहरी सहयोग (अंतर्राष्ट्रीय समझ) के बीच संतुलन

कैसे बनाया जाता है। आज का भारत "विश्व बंधु" के रूप में उभर रहा है, जो शांति, स्थिरता और समावेशी विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

## 8. निष्कर्ष

राष्ट्रीय एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय समझ वर्तमान वैश्विक परिदृश्य के दो अनिवार्य स्तंभ हैं। इस शोध पत्र के विस्तृत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ये दोनों अवधारणाएँ एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जहाँ राष्ट्रीय एकीकरण किसी देश की आंतरिक शक्ति, स्थिरता और पहचान का आधार है, वहीं अंतर्राष्ट्रीय समझ उस देश को वैश्विक मंच पर एक जिम्मेदार और सक्रिय सदस्य के रूप में स्थापित करती है। शिक्षा इस पूरी प्रक्रिया में एक 'उत्प्रेरक' (Catalyst) के रूप में कार्य करती है। शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह वह संस्कार है जो व्यक्ति के भीतर 'स्व' से ऊपर उठकर 'सर्व' के कल्याण की भावना जागृत करता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में, शिक्षा ने संकीर्ण विचारधाराओं, भाषाई विवादों और क्षेत्रीय भेदभाव की दीवारों को गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जब एक विद्यार्थी अपने देश के संवैधानिक मूल्यों, साझा इतिहास और सांस्कृतिक गौरव को समझता है, तो उसके भीतर राष्ट्रीय एकता की भावना स्वतः ही प्रज्वलित हो जाती है। वहीं दूसरी ओर, 'वसुधैव कुटुंबकम्' का भारतीय दर्शन हमें अंतर्राष्ट्रीयता की ओर ले जाता है। आज का युग तकनीकी रूप से जुड़ा हुआ है, जहाँ जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और महामारी जैसी चुनौतियाँ किसी एक राष्ट्र की सीमा तक सीमित नहीं हैं। ऐसे में शिक्षा का दायित्व है कि वह छात्रों को 'वैश्विक नागरिकता' (Global Citizenship) के लिए तैयार करे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 इस दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है, जो समग्र विकास के साथ-साथ छात्रों को वैश्विक चुनौतियों के प्रति संवेदनशील बनाने पर बल देती है।

अंततः, हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि राष्ट्रीय एकीकरण वह नींव है जिस पर अंतर्राष्ट्रीयता का भव्य भवन खड़ा किया जा सकता है। एक व्यक्ति जो अपने देश से प्रेम नहीं करता, वह विश्व से प्रेम करने का दावा नहीं कर सकता। वास्तविक शिक्षा वही है जो "सिर, हृदय और हाथ" (Head, Heart, and Hand) का ऐसा समन्वय करे कि युवा पीढ़ी के पास सोचने के लिए वैश्विक दृष्टि हो, लेकिन उनके पैर अपनी सांस्कृतिक जमीन पर मजबूती से टिके हों। भविष्य की शिक्षा को और अधिक समावेशी, मूल्य-आधारित और मानवीय संवेदनाओं से युक्त होना होगा, ताकि हम न केवल एक अखंड भारत का निर्माण कर सकें, बल्कि एक शांतिपूर्ण और सुरक्षित विश्व की परिकल्पना को भी साकार कर सकें। एकता और सहयोग ही वह एकमात्र मार्ग है जिससे मानवता का कल्याण संभव है।

## संदर्भ सूची

1. Aurora, G. L. (2002). Teachers and their education: Global and national perspectives. Authors Press.
2. चौबे, एस. पी., एवं चौबे, ए. (2001). भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएँ. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
3. Frogman, I., & Kouzminov, Y. (2025). Higher education in the age of global citizenship. Academic Press.
4. Global Education Monitoring Report. (2026). Education for peace and sustainable development: A decade review. UNESCO.
5. मिश्रा, विद्यानिवास. (2005). भारतीय संस्कृति के आधार. प्रभात प्रकाशन.
6. Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
7. Ministry of External Affairs. (2023). Vasudhaiva Kutumbakam: India's G20 Presidency and global harmony. Government of India.

8. NCERT. (2005). National Curriculum Framework (NCF 2005). National Council of Educational Research and Training.
9. पाण्डेय, रामशकल. (2008). शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार. विनोद पुस्तक मंदिर.
10. साहनी, पी. (2024). 21वीं सदी में राष्ट्रीय एकीकरण और शिक्षा. सामयिक प्रकाशन.
11. Sharma, R. N. (2016). Indian education into the 21st century. Atlantic Publishers.
12. ठाकुर, ए. एस., एवं बेरी, एन. (2018). शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य. विकास पब्लिशिंग हाउस.
13. त्यागी, एस. के. (2012). भारतीय शिक्षा की समकालीन समस्याएँ. अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
14. UNESCO. (2015). Global citizenship education: Topics and learning objectives. UNESCO Publishing.
15. UNESCO. (2021). Reimagining our futures together: A new social contract for education.